# श्री रणवीर-केन्द्रीय-संस्कृत-विद्यापीठम्

काश्मीर-शैवदर्शन-विभागः

प्रवेश संख्या 69---- विषय :- शैवदर्शनम् क्रम सं. 33----

नाम -जन्ममरणविचारः ग्रन्थकार नाम - भट्टवामदेव---

पत्र सं. 14---- अक्षर सं. (पंक्तौ) शब्द---6- पंक्ति सं. (पृष्ठे)--16--

आकारः 6.5"x8.5"-- लिपिः शारदा-- आधारः --कागज----

वि. विवरणम् -पू.--------

पर्यवेक्षक :------------- दिनांकः -----------

55

M. K. Marwan

१.

No 69

"ज. म. वि."

जन्म-मरण-विचार:

२२

M.K.Mammam

ग॰म-रत्न-भण्डार:

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

लक्ष्मीं वेद्मि यत्तेन परिगृहीतत्वात् । तेन वेदम
न्तर्हितत्वात् शिवः प्रमत्तवः सुष्यत्त्वमय
ङ्व शुद्धमस्मत्सिद्धम ॥ ६ ॥ इति । तस्
वमभिङ्गणवाञ्छमायामन्त्र(?) स्वेन स्वरूपमि
तभावत्त्वमशिम किञ्च शुद्धत्वेन शुद्धत्वं मन्त्रमि
तमिवावरणमयविच्छिन्नाकलः प्रलयाकलः
सकलस्तु समलस्तु । तथा लवने केवलमलेन
संयुक्तो विच्छिन्नाकलस्ततः स्मृतः मालवमायी
यात्मप्रवदः प्रलयाकलः । त्रिविधमल
वमायीयकर्मः संज्ञः । तदेव कलाभिः सह
युक्तः सकलः । तस्यैव मायामयमनः ।
तत्र प्रवृत्त्या पिण्डवत् सुषुप्तनिवृत्तमानः प्र
मतिज्ञः सर्वं विचित्र कलातत्त्वं किञ्चित्
कलाः प्रमुलप्रमाणाति तत्रापि किञ्चि
त्सर्वज्ञत्वं विद्यातत्त्वं किञ्चिन्मतिरागः पंच
रागतत्त्वं तस्मान्नियामकतत्त्वं सुखदुःखविशुद्धत्त्व

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

𑆪𑆳𑆠𑆴𑆥𑆑𑇀𑆰𑆩𑆠𑆴𑆂 𑆯𑆴𑆠𑆴𑆩𑆳 𑇆 𑆱𑇀𑆠𑆶𑆠𑇀𑆮𑆼𑆩𑆬𑆴𑆠
𑆩𑆳𑆲𑇀𑆮𑆪𑆩𑆥𑇀𑆫𑆵𑆡𑆴𑆨𑆵𑆪𑆮𑆸𑆠𑇀𑆠𑆳 𑇅 𑆓𑆤𑇀𑆣𑆂 𑆫𑆱𑆳𑆑𑆸𑆠𑆼
𑆠𑆶𑆨𑇀𑆪𑆁 𑆱𑆁 𑆱𑆳𑆩𑇀𑆨𑆴𑆱𑇀𑆮𑆬𑆪𑆠𑆼 𑆩𑆱𑆩𑆾𑆠𑆴 𑆠𑆼𑆠𑆩𑆑𑇀𑆰𑆶
𑆩𑆑𑇀𑆰𑆶𑆂 𑆱𑆶𑆠𑇀𑆫𑆩𑆖𑇀𑆗𑆮𑆂 𑇆 𑆌𑆮𑆁 𑆱𑆁 𑆱𑆼𑆤 𑆱𑆶𑆠𑇀𑆫𑆼 𑆱𑆴
𑆪𑆳 𑆠𑆴𑆪𑆥𑆳𑆢𑇀𑆫𑆱𑆩𑆳 𑇅 𑆯𑇀𑆫𑆵𑆁 𑆠𑆶𑆨𑇀𑆪𑆁 𑆱𑆁 𑆱𑆼𑆤 𑆛𑆮𑆝
𑆢𑆶𑆮𑆩𑆖𑇀𑆗𑆮𑆂 𑇆 𑆝𑆠𑆴 𑇅 𑆠𑆶𑆱𑆼𑆮𑆁 𑆑𑆸𑆠 𑆩𑆳𑆢𑇀𑆫𑆣𑆴𑆢𑇀𑆫𑆩𑆑𑇀𑆰𑆶
𑆢𑆶𑆩𑆑𑇀𑆰𑆶𑆮𑆼𑆠 𑆱𑆥𑇀𑆫𑆵𑆡𑆴𑆩𑆳𑆢𑇀𑆫𑆑𑆼 𑆓𑆑𑆼𑆠𑆱𑆵 𑆑𑆶𑆩𑆩
𑆩𑆩𑆪𑆳𑆱𑆤𑆠𑆁 𑆓𑆤𑆤𑆵𑆬 𑆓𑆼 𑆱𑆠𑆂 𑆑𑆬𑆴𑆬𑆵
𑆛𑆮𑆠𑆴 𑆠𑆼𑆮𑆑𑇀𑆰𑆶𑆥𑆁 𑆢𑆠𑆂 𑆥𑆱𑆵 𑆠𑆼𑆥𑇀𑆪𑆤𑆂 𑆪𑆳𑆑𑇀𑆰𑆶
𑆑𑇀𑆰𑆥𑆴𑆠𑆶𑆫𑆂 𑆱𑆑𑇀𑆰𑆯𑆑𑇀𑆠𑆴𑆂 𑆱𑆁𑆮𑆴𑆑𑆬𑇀𑆥𑆳𑆱𑆂 𑆱
𑆖𑆑𑇀𑆰𑆩𑆥𑆠𑆴𑆫𑆂 𑆱𑆑𑇀𑆰𑆂 𑆱𑆳𑆥𑆑𑆂 𑆥𑆼
𑆱𑆁𑆮𑆴𑆠𑇀𑆠𑆴𑆠𑆴𑆪𑆳 𑆮𑆢𑇀𑆫𑆬𑆪𑆠𑆼 𑇅 𑆠𑆑𑇀𑆠𑆁 𑆱𑆴𑆢𑇀𑆣𑆳 𑆱
𑆢𑇀𑆫𑆯𑆳𑆩𑆠 𑆱𑆼𑆩𑆥𑇀𑆫𑆱𑆼𑆬𑇀𑆥𑆳 𑆩𑆥𑆳𑆩𑆥𑆳 𑆤𑆴
𑆥𑆑𑇀𑆰𑆓𑆠𑆳 𑇅 𑆓𑆠𑆮𑆱 𑆱𑆴𑆩𑆑𑇀𑆰𑆠 𑆩𑆢𑇀𑆫𑆮𑆩 𑆮𑆴
𑆑𑆳𑆱𑆴𑆠𑆴 𑇆 𑆮𑆵𑆓𑆑𑆬𑆥𑆵 𑆩𑆮𑆱𑆳𑆩𑆑𑇀𑆰
𑆫𑆩𑆖𑇀𑆗𑆮𑆂 𑆢𑆑𑆳𑆢𑇀𑆫𑆣𑆴𑆠𑆁𑆓𑆠𑆂 𑆱𑆴𑆠𑆁 𑆑𑆬𑆴𑆬

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

𑆩𑆶𑆤𑆴𑆤𑆽𑆮 𑆱𑆶𑆠𑆂 𑆪𑆱𑇀𑆪 𑆩𑆢𑇀𑆫𑆁 𑆱𑇀𑆮𑆾𑆑𑇀𑆠𑆁 𑆠𑆬𑇀𑆬𑆪𑆁 𑆪𑆳𑆠𑆴𑆱𑆫𑇀𑆮

𑆲𑆠𑆳 𑆅𑆠𑇀𑆪𑆱𑇀𑆩𑆴𑆤𑇀 𑆱𑆶𑆠𑇀𑆫𑆼𑆟 𑇅 𑆠𑆠𑆂 𑆱𑆫𑇀𑆮𑆑𑆳𑆫𑇀𑆪𑆂

𑆱𑆩𑇀𑆥𑆤𑇀𑆤𑆼 𑆩𑆤𑇀𑆠𑇀𑆫𑆼 𑆥𑆫𑆴𑆮𑆫𑇀𑆠𑆩𑆳𑆤𑆼 𑆠𑆢𑆴𑆠𑆫𑇀𑆑𑆫𑇀𑆠𑆮𑇀𑆪 𑆤𑆴

𑆯𑇀𑆖𑆪 𑇅 𑆅𑆠𑇀𑆪𑆱𑇀𑆩𑆴𑆤𑇀 𑆱𑆶𑆠𑇀𑆫𑆳𑆫𑇀𑆡𑆂 𑆱𑆩𑆳𑆥𑇀𑆠𑆳𑆥𑆴 𑆱𑆫𑇀𑆮𑆼

𑆬𑆑𑇀𑆰𑆟𑆱𑆩𑆳𑆱 [illegible] 𑆥𑆫𑆴𑆪𑆩𑆳𑆟 𑆱𑆠𑆂 𑆱𑆫𑇀𑆮

𑆱𑆫𑇀𑆮𑆱𑇀𑆪 𑆥𑆫𑆴𑆤𑆴𑆩𑆮𑆴𑆱𑆠𑇀𑆠𑆪𑆂 𑇆 𑆅𑆠𑇀𑆪𑆶𑆑𑇀𑆠𑆼 𑆱𑆠𑆴 𑆮

𑆱𑆶𑆠𑇀𑆫𑆠𑆥𑆬 [illegible] 𑆠𑆴𑆮𑆳 𑆢𑆴𑆑𑇀𑆑𑆼𑆩𑆼 𑆑𑆼 𑆩𑆴 𑆑𑆠𑇀𑆠

𑆁𑆤𑆵𑆪𑆠𑆼 𑆱𑆾𑆥𑆴 𑆱𑆴𑆢𑇀𑆢𑆂 𑆱𑆫𑇀𑆮𑆑𑇀𑆫𑆴𑆪𑆳𑆥𑆫𑆴𑆩𑆳𑆮 [illegible]

𑆬𑆴𑆠𑆴 𑆅𑆠𑇀𑆪𑆶𑆑𑇀𑆠 𑆩𑆤𑇀𑆠𑇀𑆫𑆼 [illegible] 𑆱𑆾𑆥𑆴 𑆮𑆴𑆤𑆼𑆠𑆴 𑆪𑆮𑆱𑆳𑆠

𑆱𑆫𑇀𑆮 𑆱𑆳𑆤𑆵𑆪𑆠𑆫𑇀𑆮𑆠𑆶 𑆮𑆫𑇀𑆠𑆩𑆳𑆤𑆴 𑇅 𑆪𑆂 𑆠𑆳𑆤𑆳𑆑

𑆪𑆤𑆴𑆑𑆳𑆪𑆽𑆂 𑆱𑆁𑆱𑆳𑆫𑆼 𑆱𑆁𑆱𑆳𑆫𑆼 𑆠𑆢𑆳𑆱𑆶𑆠𑇀𑆫𑆂 𑆱𑆫𑇀𑆮

𑆩𑆴𑆮 𑆱𑆠𑆂 𑆥𑇀𑆫𑆠𑆴 𑆱𑆫𑇀𑆮𑆩𑆴𑆮 𑆱𑆫𑇀𑆮𑆠𑇀𑆫𑆥𑆫𑆂 𑇅 𑆅𑆠𑆴 𑇅

𑆬. 𑆮𑆳𑆱𑆁 𑆱𑆴𑆢𑇀𑆢𑆤𑆵𑆠𑆴 𑆤𑆴𑆪𑆩𑆳𑆮𑆴 𑆑𑆫𑆪 𑆅𑆠𑇀𑆪𑆱𑇀𑆩𑆴𑆤

𑆮𑆴. 𑆱𑇀𑆩 𑆱𑆩𑆶𑆤𑆴𑆤𑆳𑆥𑆴 𑆱𑆠𑆑𑆠𑆠𑆩𑇀 𑆱𑆫𑇀𑆮𑆑𑆱𑆳𑆩𑆴𑆠𑆶

𑆠𑆱𑇀𑆩𑆳𑆠𑇀 𑆠𑆠𑆶𑆱𑆠𑇀𑆠𑆴 𑆥𑆠𑆶 𑆥𑆫𑆴𑆯𑆴𑆠𑆂 𑆑𑆼𑆤𑆳𑆥𑆴 𑆱𑆴

०. 𑆱𑆳 𑆱𑆴𑆢𑇀𑆢𑆴 𑆥𑆫𑆪𑆼𑆤 𑆱𑆁𑆮𑆴𑆱𑇀𑆩𑆪𑆤𑆼 𑆮𑆴𑆱𑆶𑆠𑇀𑆠𑆶 𑆱𑆫𑇀𑆮𑆁 𑆤𑆴𑆫𑆁

[illegible]

तद्वत्तदीयं स्वात्मसन्दर्भेतत् ॥ यस्मात्तत्त्वं परात्परं
येनात्मस्वरूपालिङ्गनमा स्मार्त्तं तु कथं तत्र सुस्पष्ट
तु समस्यमिश्रित ॥ इति । श्रीरामकण्ठाचार्यकृते तत्र
स्कन्दे तत्र सारी तं यावत्तत्त्वलिङ्गविमेत । तद्धि सिद्ध
सुपर्वेणापि सत्त्वमनात्मसमयः ॥ इति । ठनव
पुष्टिनिपतिनापि तीर्थे सुपमध्ये वनस्य तपसा
तापि पतितत्पत्ते रूपमा । सुतत्त्वसमकालमतः
केवलं यातित्रयमेकः ॥ इति । श्रीमद्देवीका
याभिप उक्तं । स्तिन्ततानं सत्वद्वानं द्विवद्धेन
श्रविभिः सतल्लोठनवसक्तः स्वस्तावनः सद
सिकः ॥ यद्यद्रूपमशेषं निवमेत्स्यत्तस्थियः
शुभेरुधुंभितिविहितं स्वप्रतिष्ठां विशदः ॥ दिव्ये
तत्समकालं तु विशुद्धियत्रजरसिता स्वयं तिप
समानं वैभवतत्त्वतः स्व विशदमा ॥ इति । स्व
तरपि सीमसंपदनं तापसं पदनं स्वरूपं
तीर्थसकलं स्वसत्त्वमतीतं विवक्षयेत ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

नीतिरङ्गः [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥

शुद्धवस्तुविषयस्तु [illegible] निर्विकल्पमिति विकल्प[illegible]
प्रत्यभिज्ञा[illegible] शुद्धस्वरूपे [illegible] :